International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 2; March 2017; Page No. 46-48

हरियाणवी लेखकों (नाटककारों) की रचनाओं में हास्य व्यंग्य

डॉ0 विशाल कुमार शर्मा

अध्यक्ष, इतिहास विभाग, हिन्दू कॉलेज, सोनीपत, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

नाटक एक अत्यंत प्राचीन विधा है। इस विधा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसका मंचन किया जाता है। वास्तव में किसी भी विधा का इस प्रकार लिखना कि उसे मंच पर पात्रों की सहायता से जीवित किया जा सके, बिल्कुल भी सरल नहीं होता। यद्यपि विश्व की सभी साहित्यिक विधाऐं स्वंय में विलक्षण हैं परंतु निश्चित ही नाट्य विधा का अपना एक अलग स्थान है।

किसी भी नाटक के अनेक महत्वपूर्ण तत्व होते हैं, जैसे कथानक, चरित्र चित्रण, देशकाल या वातावरण, उद्देश्य आदि। कथानक से हमारा अभिप्राय नाटक की विषय–वस्तु से होता है अर्थात् नाटक की कहानी क्या है, यह सामाजिक है, राजनैतिक है, व्यग्यांत्मक है या किसी अन्य प्रकार की है। चरित्र चित्रण के अन्तर्गत नाटक के विभिन्न पात्र आते हैं, नायक, नायिका, सह–नायक, सह–नायिका, खलनायक आदि। देशकाल से अभिप्राय उस परिस्थिति या परिवेश से होता है जिसमें उस नाटक की रचना की गई है यथा, नाटक प्राचीनकाल में रचित है, या आधुनिक काल में, वह स्वतंत्रता से पूर्व का दृश्य प्रस्तुत करता है या बाद का आदि। अंत में नाटकीय तत्वों में सबसे महत्वपूर्ण तत्व अर्थात् नाटक का उद्देश्य। वास्तव में कोई भी साहित्यिक विधा निरूद्देश्य नहीं रची जाती। उद्देश्य विशिष्ट भी हो सकता है और साधारण भी। नाटक के भी अनेक उद्देश्य हो सकते हैं जैसे सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, राजनैतिक और यहां तक कि उद्देश्य केवल मनोरंजन भी तो सकता है, अर्थात् नाटक केवल मनोरंजन के लिए भी लिखा एंव मंचित किया जा सकता है।

हरियाणा साहित्य की विभूतियों का क्षेत्र है। यहां ऐसे उसके साहित्यकारों ने जन्म लिया है अथवा इस क्षेत्र को अपना कर्मस्थल बनाया है, जिन्होनें साहित्य के क्षेत्र में अपनी अलग छाप छोड़ी है। हरियाणवी लेखकों में जहां अनेक ऐसे साहित्यकार नजर आते हैं, जिन्होनें पद्य साहित्य में नाम कमाया है, वहीं अनेक नाटककार भी हमारे सामने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए प्रतीत होते हैं। हरियाणवी नाटककारों ने नाटकीय तत्वों का अक्षरशः पालने करते हुए कुछ ऐसी रचनाऐं या नाटक लिखें हैं जो स्वंय में मील का पत्थर है।

वास्तव में, एक ओर जहां नाटकों की रचना करना एक दुष्कर कार्य होता है, वहीं हास्यं व्यग्ंय से परिपूर्ण नाटकों की रचना और भी अधिक दुष्कर है क्योंकि हास्य व्यंग्य की कोई सीमा नहीं हाती। हास्य जहां एक ओर नाटक को जीवंतता प्रदान करता है, वहीं व्यंग्य विशिष्ट उद्देश्य को पूर्ण करता है। हरियाणा के नाटककारों के रक्त में ही हास्य व्यंग्य समाहित है और इन नाटककारों ने ऐसे अनेक नाटक लिखे हैं, जो ना सिर्फ हमें हास्य से गुदकुदाते हैं वरन् अनेक सामाजिक, राजनैतिक और सास्कृतिक पहलुओं पर व्यंग्य के बाण भी छोड़ते हैं।

हरियाणा क्षेत्र के प्रमुख नाटककार अनेक हैं जैसे स्वदेश दीपक, रामफल सिंह 'चंचल', रघुवीर सिंह मचाना, पं0 किशन चंद शर्मा, डा. राजवीर धनखड़, भारतभूषण सांघीवाल, कंवल हरियाणवी, डा. विश्वबंधु शर्मा, अमृतलाल मदान, कवंलनयन कपूर, रामफल चहल आदि। यद्यपि ये सभी नाटककार स्वयं में विलक्षण प्रतिभा के धनी हैं परंतु हमारा उद्देश्य इनकी रचनाओं के मात्र एक पक्ष अर्थात् हास्य व्यंग्य को स्पष्ट करना है। अतः इन सभी नाटककारों के द्वारा रची गई रचनाऐं केवल एक पक्ष या एक कसौंटी पर ही कस के देखी जायेगी और वह पक्ष है हास्य व्यंग्य।

हरियाणा के नाटककारों जिन्होंने अपने हास्य व्यंग्य से अपने नाटकों की जीवंत बनाया है, उनमें सबसे पहले नाम है, कंवल हरियाणवी का। इनका जन्म कैथल जिले के पाई नामक गांव में 9 मई, 1927 को हुआ। इनके पिता श्री केवलराम व्यास धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे। कंवल न हरियाणा और हरियाणवी को बहुत निकटता से देखा और भोगा, जिसकी झलक उनके गद्य साहत्य, विरोधकर नाटकों में देखी जा सकती है। कंवल के नाटकों में विषयगत विविधता, सामाजिक विंसगतियों का उद्घाटन, मनौवैज्ञानिकता का समावेश, भौतिकतावादी दृष्टिकोण का उद्घाटन जैसी विशेषताऐं सहज ही पाई जाती हैं। उनके नाटक अनेक विषयों पर लिखे गये है। सामाजिक विसंगतियों एंव भौतिकतावादी दृष्टिकोण पर उन्होंने अपनी व्यवहारिक भाषा से तीखे तज कसे है और इन विसंगतियों का जमकर मजाक उड़ाया है वे प्रायः तद्भव एंव देशज शब्दों का प्रयोग करते है, जो सभवतः उन्हे हरियाणा की धरती से और अधिक निकटता से जोड़ता है। कंवल अपने नाटकों में अधिक चरित्र चित्रित नहीं करते अर्थात् उनके नाटकों में चरित्रों की भरमार नहीं मिलती किंतु जो चरित्र मिलते हैं, वे अत्यंत सहज एंव सरल होते हैं :–

उनके एक नाटक का संवाद जो भारतीय संस्कृति की छाप छोड़ता है :–

''स्यामू :– चिलम् भर दयूँ दाद्दा।
दाद्दा :– ना बेट्टे। मैं आप भर ल्यूगाँ। मैं तन्नैं होक्के कै हाथ नी लाण देंदा।''

''हास्य व्यंग्य का एक उदाहरण :–

हम आठमी कलास मैं कुल नौ लड़के थे, वे बी पांच गाम्भाँ के जिनमैं तैं पाँच पास होये थे अर च्यार फेल होगे थे।''

एक अन्य हरियाणवी नाटककार श्री रामफल चहल हैं, जिन्होंने हरियाणवी नाटकों में हास्य व्यंग्य को महत्वपूर्ण स्थान दिया

है। इनका जन्म भिवानी जनपद में स्थित ग्राम नीमड़ी में सन् 1956 में हुआ। आरंभ से ही चहल एक प्रतिभाशाली साहित्यकार थे। हरियाणा के रंगमंच, हरियाणवी फिल्म उद्योग आदि का सफलतापूर्वक लेखन, इन्होंने किया। रामफल चहल एक यथार्थवादी कलाकार हैं इन्होंने अपने चारों ओर जो देख व भोगा उसका सजीव वर्णन किया। इन्होंने पश्चिमी मौतिकतावादी दृष्टिकोण का निराकरण किया है। इन्होने अपनी रचनाओं के माध्यम से वर्तमान संस्कृति तथा उसके जीवन मूल्यों के अवमूल्यन, पर भी प्रकाश डाला है। चहल मनोवैज्ञानिकता से पूर्णता परिचित है। भाषा पात्रानुकूल व प्रसंगानुकूल है।

व्यंग्य का एक उदाहरण प्रस्तुत है :–

''रै तेरी इसतै नहीं, तेरे करम बिगड़ रहे सैं तू सांची सांच बता इबकै कोणसी जमात मै सै यो छोहरा न्यू कहवै था तू ग्यारहवीं मैं ए सें अर तीनूं साल फेल हुया था''

वास्तव में उक्त कथन आज पथभ्रष्ट होती नौजवान पीढ़ी पर तीक्ष्ण व्यंग्य है।

''तो तूं इब कै करैगा, तू गाय मैं चालकी हाल जोड़ ले इब्बै बांध ले बसतरा, भला छोहरियां गेला सलीमें कहे खानदानी घरां के बालक देख्या करै के हाण्ड़ लोफरपणे म्हैं। मैं कर्जे में दब लिया।''

इस तरह श्री चहल नौजवानों पर व्यंग्य करते है कि वे अपने परिजनों पर कोई ध्यान न देकर, केवल अपने आप में मस्त रहते है और अपनी जिम्मेदारियों से बचने का प्रयास करते हैं। हरियाणा के अन्य प्रसिद्ध नाटककार जो अपने हास्य व्यंग्य के लिए जाने जाते हैं डा. विश्वबंधु शर्मा हैं। डा. शर्मा अपनी योग्यता और मनौवैज्ञानिक विश्लेषण के लिए जाने जाते हैं। उनके हास्य व्यंग्य का आरंभ उनके नाटकों के विभिन्न पात्रों के नामों से ही हो जाता हैं जैसे उनके विभिन्न पात्रों के नाम है – धापाँ, भरपाई, भैरूनाथ, भूतनाथ आदि। हास्य उनके नाटकों के शीर्षक में ही बसा है जैसे अपणा मरण जगत की हाँसी। इन नामों से डा. शर्मा की सरलता और हरियाणवी मौलिकता का परिचय प्राप्त होता है। वे जिस प्रकार का परिवेश अपने नाटकों में बनाने का प्रयास करते है, वह स्वंय में अनूठा है।

एक दृश्य की भूमिका की परिकल्पना :–

''सायंकाल का समय है। सामान्य घर का वातावरण है, कभी कभी एकआध कुत्ते के भौंकने की आवाज आ रही है। बीच बीच में पशु के डकारने और रंभाने की ध्वनि भी स्पष्ट सुनाई दे रही है। .....''

हास्य का एक रोचक उदाहरण :–

''ऐ रेशयाँ! देख तेरी भाभी ने देस, उसनै तो कई दिन हो लिए पड़ी नै बैरा नै के–के बकड़ै सै।''
''ए धापाँ बैद जी की दवाई का किमै असर सै ?
कै आग असर सै, जाए रोया बैद बीस रप्पईये ले ग्या आर दस ढाल का काढ़ा देग्या .....''

सामाजिक रूढ़ियों पर व्यंग्य भी स्पष्ट होता है :–

''माई जल्दी बहू के गहने उतारकर बाबा के पास रख दो नहीं तो अनर्थ हो जायेगा, अनर्थ हो जायेगा, भूत रूष्ट हो जाएगा भूत बाबा के शरीर से निकलकर बहू मैं फिर प्रवेश कर जाएगा।
धापाँ ल्यादे सैड़ दे सी नही ंतो सारी भारी जांवागी।''

एक अन्य हरियाणवी नाटककार, रघुवीर सिंह मथाना हैं। इन्होंने मूल रूप से यथार्थवादी नाटकों की रचना की हैं, परंतु यथार्थवाद ही व्यंग्य की जन्म देता है अतः इनके नाटक भी व्यंग्य से परिपूर्ण हैं। पुलिस प्रशासन पर तीखे व्यंग्य करते हुए, आपके अनेक नाटक समाज के इस पक्ष को जनता के बीच रखते हैं।

व्यंग्य का एक जींवत उदाहरण है :–

''मुंशी जी। इसका बहुत खून निकल गया है, जल्दी रपट लिख दो तो .....

किते नी मरता यू। थम नै बेरा कोन्या के आज स्वर्ण जयंती मनाई जा रही है। शहर में बड़े बड़े नेता लोग आए हुए हैं फोर्स सारी ड्यूटियां पै गई होई है। जाओ। हस्पताल चले जाओ। डियूटी पै तै कोई हवलदार आया तै उसनै ब्यान लेण भेज द्यूँगा।

अतः व्यंग्य स्पष्ट है कि पुलिस प्रशासन के लिए एक मरणासन्न व्यक्ति के जीवन से अधिक महत्व एक कार्यक्रम का है। लोकतंत्र पर ऐसा कुठाराघात, हरियाणवीं नाटकों में अन्यत्र विरला ही मिलता है।
स्वदेश दीपक, हरियाणवी नाटककारों में उत्कृष्ट स्थान रखते हैं और उनके नाटक बाल भगवान काल कोठरी तथा सर्वोपरि कोर्ट मार्शल, हरियाणा के यथार्थवादी नाटक में विशिष्ट हैं। स्वयं लेखक ने अपने नाटक, कोर्ट मार्शल को ''भयानक क्रूर नाटक'' की संज्ञा दी है। यह नाटक समाज का एक नग्न चित्र प्रस्तुत करता है तथा प्रसिद्ध अंग्रेजी समाचार पत्र ''द इंडियन एक्सप्रैंस'' ने इस नाटक के विषय पर टिप्पणी की हैं :–

> "Kudos to Court Martial .....a drama that goes beyond the limits of drama."

वास्तव में नाटककार स्वदेश दीपक की यह रचना स्वंय में तीखे व्यंग्य समेटे हुए है और ऐसे नाटकों से हरियाणवी रंगमंच नये आयामों को छूता हुआ प्रतीत होता है।
इस प्रकार, हरियाणवी लेखकों द्वारा रचे गये विभिन्न नाटक हास्य और व्यंग्य की दृष्टि से सम्पूर्ण प्रतीत होते है। इन नाटकों को हास्य, जहां इस क्षेत्र के लोगों की सरलता, सहजता और सहदयता दिखाता है, वहीं दूसरी ओर व्यंग्य के माध्यम से समाज के उन अनछुऐ पहलुओं पर भी प्रकाश डालने और उन्हें सुधारने का सच्चा एंव मौलिक प्रयास किया जाता है, जो किसी न किसी रूप में हमारे लिए बड़ी समस्या बनते जा रहे हैं। हरियाणवीं व्यंग्य की सबसे बड़ी विशेषता यही मानी जा सकती है कि इस व्यंग्य में भी सरलता है जो विकृति को शनैः शनैः ठीक करने का प्रयास करती है और नाटक के दर्शकों के हद्यों पर गहरी छाप छोड़ती है।

सदंर्भ सूचीः

1. Synopsis and Reviews of Court Martial.
2. News about Swadesh Deepak Court Martial.
3. हरियाणा का हिन्दी साहित्य – सं. डा. लालचंद गुप्त 'मंगल'
4. नाट्य विधा के तत्व – गिरधारी लाल मुकुंद
5. हरियाणा के प्रसिद्ध नाटककार – श्री धर वाजपेयी
6. म्हारा हरियाणा संकलन – कंवल हरियाणवी
7. हरियाणवी लोकधारा – प्र. संपादक – डा. मीरा गौतम